Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 37

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

17 नवम्बर 2016 ई

16 सफर 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा के भेजे गए से जान बूझकर मुंह फेरना ऐसी बात नहीं है कि इस पर कोई पकड़ न हो। इस गुनाह का चाहने वाला मैं नहीं बल्कि एक ही है जिस के समर्थन के लिए मैं भेजा गया अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। जो व्यक्ति मुझे नहीं मानता वह मेरा नहीं बल्कि उसका अवज्ञाकारी है जिस ने मेरे आने की भविष्यवाणी की

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

डॉक्टर अब्दुल हकीम ख़ान अपने रिसाला "अल मसीहुद्दज्जाल" आदि में मेरे पर यह आरोप लगाता है कि मानो मैंने अपनी किताब में लिखा है कि जो व्यक्ति मेरे पर ईमान नहीं लाऐगा यद्यपि वह मेरे नाम से भी अनजान होगा और यद्यपि वह ऐसे देश में होगा जहां तक मेरी दावत नहीं पहुंची तब भी वह काफिर हो जाएगा और जहन्नम में पड़ेगा। यह डाक्टर का सरासर इफ़्तरा मैंने किसी किताब या किसी इश्तेहार में ऐसा नहीं लिखा। उस पर फर्ज़ है कि वह ऐसी कोई मेरी किताब पेश करे जिसमें यह लिखा है। याद रहे कि उसने केवल चालाकी से जैसा कि आदत है यह इफ़्तरा मेरे पर किया है। यह तो ऐसी बात है कि स्पष्ट रूप से कोई बुद्धि इसे स्वीकार नहीं कर सकती जो नाम से भी अनजान है इस पर बदला कैसे हो सकता है। हाँ कहता हूँ कि जब से मैं मसीह मौऊद हूँ और ख़ुदा ने आम तौर पर मेरे लिए आसमान से निशान दिखाए हैं। इसलिए जिस व्यक्ति पर मेरे मसीह मौऊद होने के बारे में ख़ुदा के निकट इतमाम हुज्जत(दलील का पूर्ण होना) हो चुका है और मेरे दावा पर वह सूचना पा चुका है वह बदला के योग्य होगा क्योंकि ख़ुदा के भेजे गए से जान बूझकर मुंह फेरना ऐसी बात नहीं है कि इस पर कोई पकड़ न हो। इस गुनाह का चाहने वाला मैं नहीं बल्कि एक ही है जिस के समर्थन के लिए मैं भेजा गया अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। जो व्यक्ति मुझे नहीं मानता वह मेरा नहीं बल्कि उसका अवज्ञाकारी है जिस ने मेरे आने की भविष्यवाणी की।

ऐसा ही मेरी आस्था आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के बारे में भी यही है कि जिस व्यक्ति को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रचार पहुंच चुका है और वह आपकी बेअसत से सूचित हो चुका है ख़ुदा तआला के निकट आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रिसालत के विषय में उस पर इतमाम हुज्जत हो चुका है वह अगर कुफ्र पर मर गया तो हमेशा जहन्नम का सज़ावार होगा।

और इतमाम हुज्जत का ज्ञान केवल ख़ुदा तआला को है। हां बुद्धि इस बात को चाहती है कि चूंकि लोग विभिन्न क्षमताओं और विभिन्न समझों वाले हैं इसलिए इतमाम हुज्जत भी केवल एक ही शैली से नहीं होगा। इसलिए जो ज्ञान की क्षमता के कारण ख़ुदा के बराहीन और चिन्हों और धर्म के गुणों को बहुत आसानी से समझ सकते हैं और पहचान कर सकते हैं अगर वह ख़ुदा के रसूल से इनकार करें तो वह कुफ्र के प्रथम स्तर पर होंगे और जो लोग इतनी समझ और ज्ञान नहीं रखते मगर ख़ुदा तआला के निकट उन पर भी उनकी समझ के अनुसार हुज्जत पूरी हो चुकी है उनसे भी रसूल के इनकार का पूछा जाएगा मगर अपेक्षा कृत पहले इनकार करने वालों से कम। बहरहाल किसी के कुफ्र और उस पर इतमाम हुज्जत के बारे में प्रत्येक व्यक्ति का भेद करना हमारा काम नहीं है यह उसका काम है जो भविष्य का जानने वाला है। हम इतना कह सकते हैं कि ख़ुदा तआला के निकट जिस पर इतमाम हुज्जत हो चुका है और ख़ुदा तआला के निकट जो इनकार करने वाला ठहर चुका है वह पूछे जाने के योग्य होगा। हां चूंकि शरीयत की बुनियाद ज़ाहिर पर है इसलिए हम इनकार करने वाले को मोमिन नहीं कह सकते और न यह कह सकते हैं कि वह पूछे जाने से बरी है और काफ़िर इनकार करने वाले को ही कहते हैं क्योंकि काफिर का शब्द मोमिन के मुकाबला पर है और कुफ्र दो प्रकार पर है।

(प्रथम) एक यह कुफ्र कि एक व्यक्ति इस्लाम से ही इनकार करता है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा का रसूल नहीं मानता। (द्वितीय) दूसरे यह कुफ्र कि जैसे वह मसीह मौऊद को नहीं मानता और उस को इतमाम हुज्जत के बावजूद झूठा जानता है जिसके मानने और सच्चा जानने के बारे में ख़ुदा और रसूल ने ताकीद की है और पहले नबियों की किताबों में भी ताकीद पाई जाती है। अत: इसलिए कि वह ख़ुदा और रसूल के फरमान का इनकार ही काफिर है और अगर ग़ौर से देखा जाए तो यह दोनों प्रकार के कुफ्र एक ही किस्म में दाख़िल है क्योंकि जो आदमी बावजूद पहचान कर लेने के ख़ुदा और रसूल की आज्ञा नहीं मानता वह कुरआन मजीद की स्पष्ट आयतों तथा हदीस के ख़ुदा और रसूल को भी नहीं मानता और इसमें शक नहीं कि जो ख़ुदा तआला के निकट पहली किस्म कुफ्र या दूसरी किस्म कुफ्र के बारे में इतमाम हुज्जत हो चुका है वह क़यामत के दिन पूछे जाने योग्य होगा और जिस पर ख़ुदा तआला के निकट इतमाम हुज्जत नहीं हुआ और वह झुठलाने वाला और इनकार करने वाला है तो यद्यपि शरीअत ने (जिस की बुनियाद ज़हिर पर है) उसका नाम भी काफिर ही रखा है और हम भी इस के शरीयत के अनुकरण में काफिर के नाम से ही पुकारते हैं मगर फिर भी वह ख़ुदा तआला के निकट इस के आयत अनुसार पूछे जाने योग्य नहीं होगा। हाँ हम इस बात के लिए अधिकृत नहीं हैं कि हम उसके विषय में मुक्ति का आदेश दें इसका मामला

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा रस्मो-रिवाज और बिदअतों की मनाही(भाग-1)

ख़ुदा तआला के नबी सदा ऐसे समय में आते हैं जब सच्ची तौहीद (एकेश्वरवाद) संसार से मिट जाती है, और मुश्रिकाना (द्वैतवादी) रिवाज धर्म का दर्जा पा जाते हैं। ऐसे समय में ख़ुदा के नबियों और उनके ख़लीफ़ों का यह काम होता है कि वह सच्चे धर्म को दुनिया में स्थापित करें और जो ग़लत बातें रस्म व रिवाज और बिदअत को (धर्म में अपनी ओर से नई बातें घड़ लेना, जिनका क़ुर्आन व हदीस में बयान नहीं) लोग अपनी ओर से धर्म में शामिल कर देते हैं उनको मिटा दें। यही काम इस युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्लाम ने किया। आप ''हकम" (फ़ैसला करने वाले) और ''अदल" (इंसाफ़ करने वाले) बन कर पधारे, और आपके द्वारा इस्लाम की दोबारा उन्नति आरम्भ हुई। आपने इस्लामी शरीअत को नये सिरे से क़ायम किया। सारी बुरी रस्मों को बता कर उस के विरुद्ध जिहाद (संघर्ष) किया और मुसलमानों को सीधा रास्ता दिखाया। यही काम हुज़ूर अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ों ने किया और वे भी अपने अपने युग में बुरी रस्मों को समाप्त करने में लगे रहे। हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के तीसरे ख़लीफ़ा ने इस दौर में बुरी रस्मों के विरुद्ध जिहाद का ऐलान करते हुए एक ख़ुत्बा जुमा में फ़रमाया :-

''हमारी जमाअत का पहला और अन्तिम फ़र्ज़ यह है कि ख़ालिस तौहीद को ख़ुद में और अपने माहौल में भी स्थापित करें और शिर्क (द्वैतवाद) की सब खिड़कियों को बंद कर दें... तौहीद के स्थापित करने में एक बड़ी रोक बिदअत और रस्म है। यह एक हक़ीक़त है जिस से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हर बिदअत और बद रस्म शिर्क का एक मार्ग है। कोई व्यक्ति जो ख़ालिस तौहीद पर क़ायम होना चाहे वह उस समय तक ख़ालिस तौहीद पर क़ायम नहीं हो सकता जब तक वह सब बिदअतों और सब बुरी रस्मों को मिटा न दे... रस्में तो दुनिया में बहुत सी फैली हुई हैं परन्तु इस समय बुनियदी तौर पर हर घराने को बता देना चाहता हूँ कि मैं हर घर के दरवाज़े पर खड़ा होकर और हर घराने को सम्बोधित करके बद रस्मों के खिलाफ़ जिहाद (संघर्ष) का ऐलान करता हूँ। और जो अहमदी घराना आज के बाद इन चीज़ों से परहेज़ नहीं करेगा और हमारी सुधार की कोशिशों के होते हुए भी सुधार की ओर ध्यान नहीं देगा वह याद रखे कि ख़ुदा और उसके रसूल और उसकी जमाअत को उसकी कुछ परवाह नहीं है। वह इस प्रकार जमाअत से निकाल कर बाहर फेंक दिया जायेगा जिस प्रकार दूध से मक्खी। अत: इस से पहले कि ख़ुदा का अज़ाब तुम पर भारी गुस्से के रंग में उतरे या उसका क़हर (क्रोध) जमाअती अनुशासन की सज़ा के रंग में आप पर आये, अपने सुधार की फ़िक्र करो और ख़ुदा से डरो, उस दिन के अज़ाब से बचो कि जिस दिन के एक सैकन्ड का अज़ाब भी सारी उमर के मज़ों के मुक़ाबला में ऐसा ही है कि यदि यह मज़े और उमरें क़ुर्बान कर दी जायें और इन्सान उस से बच सके तो तब भी मंहगा सौदा नहीं सस्ता सौदा है।"

(ख़ुत्बा जुमा 23 जून 1967 ई.)

अधिकतर बुरी रस्में जो इस समय प्रचलित हैं, ख़ुशी के अवसरों जैसे कि शादी ब्याह इत्यादि से सम्बंधित हैं या फिर मौत फ़ौत से या कुछ ऐसी ही आस्थाओं से सम्बंधित हैं। इन सब के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके खलीफ़ों ने जो राहनुमाई फ़रमाई है उसका कुछ वर्णन निम्नलिखित हैं :-

बच्चे की पैदाइश से सम्बंधित रस्में

बच्चे की पैदाइश माँ बाप के लिये खुशी का एक ख़ास समय होता है। इस समय पर अच्छे रंग में खुशी मनाने से इस्लाम ने मना नहीं किया, क्योंकि ये एक कुदरती खुशी है। अगर शुकराना के तौर पर कुछ मिठाई वग़ैरह बाँट दी जाये तो हर्ज नहीं लेकिन ढोल बजाना, नाच गाना करना किसी तरह भी जाइज़ नहीं। इस्लामी तरीक़ा यह है कि सातवें दिन अक़ीक़ा किया जाये यानी लड़का पैदा हो तो दो बकरे, और लड़की पैदा हो तो एक बकरा क़ुर्बान किया जाये। पैदा होने वाले बच्चे के बाल मुंडवाये जायें, लेकिन अगर किसी को अक़ीक़ा करने की ताक़त नहीं तो ज़रूरी नहीं। बच्चे बड़े होकर ख़ुद भी क़ुर्बानी कर सकते हैं। क़ुर्बानी का गोश्त ग़रीबों, रिश्तेदारों व पड़ोसियों में बाँटा जाये ख़ुद भी इस्तेमाल कर सकते हैं। लड़का हो तो ख़त्ना भी साथ ही करवा देना बहुत अच्छी बात है।

साल गिरह (जन्म दिन) मनाना

बच्चे के बारे में एक रस्म ये है कि हर साल पैदाइश की तारीख़ पर जन्म-दिन मनाया जाता है, खाना खिलाया जाता है, तरह-तरह के तोहफ़े दिये जाते हैं और बहुत सा रुपया ख़र्च किया जाता है। यह बुरी रस्म है, इससे बचना अच्छी बात है।

नाक, कान छिदवाना, चोटी रखना

कुछ लोग बच्चों के नाक-कान छिदवाते, बाली और बुलाक़ पहनाते हैं या पैरों में घुँघरू पहनाते या सर पर चोटी सी रखते हैं। ये सब बुरे और ग़ैर इस्लामी रिवाज हैं जो दूसरी कौमों से मुसलमानों में आ गये हैं। मन्नत के तौर पर जो सर पर चोटी रखते हैं इसके बारे में पूछे जाने पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :-

''नाजाइज़ है ऐसा नहीं करना चाहिए"

(मलफ़ूज़ात जिल्द नौ, पृ. 216)

शादी-ब्याह से सम्बंधित रस्में

दफ़ बजाना (ढोलक बजाना)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''जो चीज़ बुरी है वह हराम है और जो चीज़ पाक है वह हलाल है। ख़ुदा तआला किसी पाक चीज़ को हराम घोषित नहीं करता बल्कि तमाम पाक वस्तुओं को हलाल फ़रमाता है। हाँ जब पाक चीज़ों में ही बुरी और गंदी चीज़ें मिलाई जाती हैं तो वह हराम हो जाती हैं। अब शादी को दफ़ (ढोल बजाना) के साथ मशहूर करना जाइज़ रखा गया है, लेकिन इस में नाच वग़ैरह शामिल हो गया तो वह मना हो गया। अगर उसी तरह पर किया जाये जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तो कोई हराम नहीं।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द नौ, पृ. 481)

नाच-गाना, बैण्ड बाजे और आतिशबाज़ी

ब्याह शादी के अवसर पर ग़लत रिवाज के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''हमारी कौम में एक यह भी गंदी आदत है कि शादियों में सैकड़ों रुपया बेकार ख़र्च होता है। अत: याद रखना चाहिए कि शेख़ी और बड़ाई के तौर पर बिरादरी में भाजी बाँटना, और उसका देना और खाना ये दोनों बातें शरीअत के अंदर हराम हैं और आतिश बाज़ी (पटाख़े, फुलझड़ियाँ) चलाना, और रण्डियों, भडुओं, डोम मीरासियों को देना पूर्णतया हराम है। व्यर्थ में रुपया बर्बाद होता है और गुनाह सर पर चढ़ता है। इसके अलावा पवित्र शरीअत में तो सिर्फ़ इतना हुक्म है कि निकाह करने वाला निकाह के बाद वलीमा करे, अर्थात थोड़े दोस्तों को खाना पका कर खिला दे।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द नौ, पृ. 46-47)

बाजा बजाने के बारे में फ़रमाया- बाजों का वुजूद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में न था। ऐलाने निकाह जिस में अवज्ञा और गुनाह की बातें न हों जाइज़ है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द पाँच, पेज 312)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी (द्वितीय) रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया:-

''ब्याह शादी के अवसर पर पाकीज़ा अश्आर (पवित्र गीत) औरतें पढ़ सकती हैं। पढ़ने वाली मज़दूरी पर न रखी गई हों तो जायज़ है।

ये भी फ़रमाया :-

''सिर्फ़ औरतों का औरतों में दफ़ (ढोलक) के साथ पाकीज़ा (पवित्र) गाना भी मना नहीं है।" (अलफ़ज़ल 14 जून 1938 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया :-

''शादी के अवसर पर मेंहदी और इसके साथ ताल्लुक़ रखने वाले रिवाज जो प्रचलित हैं हमारे नज़दीक ग़ैर इस्लामी हैं। हमारी जमाअत को इससे बचना चाहिए। (रिपोर्ट मज्लिस मुशावरत, 1942 ई. पृ. 24)

दहेज दिखाना

जहेज़ दिखाने का जो रिवाज प्रचलित है इसके बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं :-

''लड़कियाँ जब अपनी सहेलियों के दहेज़ वग़ैरह को देखती हैं तो फ़िर वह भी

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

यह अल्लाह तआला की ही कृपा है जो हमें ताकत देता है कि हम सीमित संसाधनों के दुनिया में हर जगह जलसे आयोजित करते हैं इन तीन दिनों में विशेष रूप से लगता है कि हर ड्यूटी देने वाले के मन से दुनियादारी की सोच ग़ायब हो गई है। केवल जलसा और निस्स्वार्थ होकर काम करना बहुमत की सोच होती है। यह काम वास्तव में एक ख़ामोश तब्लीग़ होती है।

हर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने अपने अपने क्षेत्र में जो काम किए हैं उनका लोग जमाअत के लिए आभारी होना चाहिए। इसी तरह कार्यकर्ताओं को भी आभारी होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें सेवा की तौफीक दी है।

जलसा सालाना जहां अपनों के लिए आध्यात्मिक सुधार के समान पैदा करता है वहाँ दूसरों के लिए भी जमाअत के परिचय और संबंधों का माध्यम बनता है। इस्लाम की असली तस्वीर दुनिया को पता चलती है।

मेरी तो यह कोशिश होती है कि वर्तमान हालात पर बात हो या जमाअत अहमदिया पर जिस तरह भी हो किसी तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आगमन से जोड़ों ताकि इस्लाम की सच्चाई उन लोगों को पता चले।

जमाअत अहमदिया कैनेडा के जलसा सालाना के अवसर पर डियूटियां देने वाले कारकुनों (सेवकों) का शुक्रिया। जलसा सालाना में शामिल होने वाले अहमदी तथा ग़ैर अहमदी मेहमानों की प्रतिक्रियाएं, अख़बारों, टीवी चैनलों तथा सोशल मीडिया पर जलसा सालाना कैनेडा की भरपूर कवरेज का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 14 अक्तूबर 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुल इस्लाम, टोरंटो, कैनेडा

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया कनाडा का जलसा सालाना पिछले सप्ताह आयोजित हुआ और अल्लाह तआला के फज़्लों को प्रकट करता हुआ अंत को पहुंचा। इस बात पर हम अल्लाह तआला का जितना भी धन्यवाद करें कम है। यह अल्लाह तआला की ही कृपा है जो हमें ताकत देता है कि हम सीमित संसाधनों के दुनिया में हर जगह जलसे आयोजित करते हैं और केवल अल्लाह तआला की विशेष कृपा से सामान्य रूप से व्यवस्था भी अच्छा कर रहे हैं। हमारे पास हर क्षेत्र को व्यावसायिक महारत रखने वाले लोग नहीं हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में काम कर के अपनी बेहतर गुणवत्ता का उत्पादन कर सकें। स्वयं सेवी हैं, वालन्टीयरज़ हैं, ख़ुद्दाम में से भी, अत्फाल में से भी, अंसार में से भी लजना और नासरात में से भी। अधिकारी भी उनमें से निर्धारित होते हैं, सहायक भी नियुक्त होते हैं। कई बार दुनियावी शिक्षा के मामले में कम पढ़ा लिखा अधिकारी नियुक्त कर दिया जाता है तो चाहे कोई डॉक्टर हो इंजीनियर हो पी.एच.डी हो उस का पालन करता है। कोई यह अंतर नहीं होता कि मेरी शिक्षा उच्च मेरा स्थिति उच्च है। यह आज्ञाकारिता की गुणवत्ता जमाअत अहमदिया में हम देखते हैं और हर तरह से फिर सहयोग भी करते हैं न केवल सहयोग जैसा कि मैंने पहले कहा पूरी इताअत करते हैं और पालन करते हुए अपने जो भी फर्ज़ हैं, ड्यूटी है, सेवा है, इसे अंजाम देते हैं। इन तीन दिनों में विशेष रूप से लगता है कि हर ड्यूटी देने वाले के मन से दुनियादारी की सोच ग़ायब हो गई है। केवल जलसा और निस्स्वार्थ होकर काम करना बहुमत की सोच होती है या उन सभी कार्यकर्ताओं की सोच होती है जो अपने आप को प्रस्तुत करते हैं। इसलिए यह कोई मानवीय काम नहीं है जो विचारों को ऐसे धारा में डालता हो, जो कर्म को निस्स्वार्थ और विनम्रता प्रदान करता हो, यह विशेष रूप से अल्लाह तआला की कृपा है अगर अल्लाह तआला की कृपा न हो तो जिस भावना से सभी बच्चे जवान बूढ़े महिलाएं पुरुष काम कर रहे हैं। यह कभी पैदा न हो सके कि अल्लाह तआला ही है जो उन सभी कार्यकर्ताओं के मन में यह भावना पैदा करता है कि तुम ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए हर सोच से ऊपर होकर हर इच्छा से ऊपर होकर अपने आप को प्रस्तुत करना है और काम करना है और केवल अल्लाह तआला की इच्छा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा को ध्यान में रखना है।

इसलिए हमें पहले तो अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए कि उसने जमाअत को सेवा करने वाले ऐसे कार्यकर्ता प्रदान करे हैं जो पढ़े लिखे होने के बावजूद निस्स्वार्थ होकर, अगर उन्हें कहा जाए कि टायलटस की सफाई करो तो वह भी करते हैं, खाना पकाने के काम करो तो वह भी करते हैं, खिलाने का काम करो तो वह भी करते हैं। सुरक्षा की डयूटियाँ देते हैं, पार्किंग की डयूटियाँ करते हैं और इस तरह के विभिन्न क्षेत्रों में ड्यूटी दे रहे होते हैं और जैसा कि मैंने कहा निस्स्वार्थ हो कर काम करते हैं। बच्चे शौक से अपनी डयूटियाँ देते हैं, बच्चे जब जलसा गाह में मेहमानों को ख़ामोशी और एक शौक से पानी पिला रहे होते हैं तो दूसरे मेहमान प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। हैरान होकर पूछते हैं कि कैसे आप लोग उन बच्चों में यह सेवा की भावना पैदा कर देते हो। दुनिया के इन हालात में जब मुसलमानों के धार्मिक गिरोह मदरसों में जाने वाले लड़कों और बच्चों और युवाओं को जिहाद के नाम पर ग़लत कार्यों और ज़ुलमों का प्रशिक्षण दे रहे हैं। क्रूर रूप में मानव जीवन के अंत की कोशिश की जा रही है। ज़िंदगियों को ख़त्म करने की कोशिश की जा रही है। जमाअत अहमदिया के बच्चे और युवा जीवन प्रदत्त काम कर रहे हैं। जब आध्यात्मिक पानी पिलाने और आध्यात्मिक खाना खिलाने की मज्लिसें लगी होती हैं साथ साथ बच्चे, युवा लड़कियां, लड़के भौतिक पानी पिलाने और खिलाने के फर्ज़ भी कर रहे होते हैं और इस वास्तविक जिहाद में शामिल हो रहे होते हैं। जो जीवन लेने के लिए नहीं बल्कि जीवन देने के लिए किया जाता है। इसलिए इस बात का इज़हार भी कुछ लोग कर देते हैं कि जब छोटे बच्चे बड़ी ख़ुशी और ज़िम्मेदारी से पानी पिला रहे होते हैं तो अपने आप उन पर प्यार आता है। इसलिए जहां हम इस बात पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें वहाँ सभी शामिल होने वालों को जलसा में बैठकर सुनने वालों को उन कार्यकर्ताओं का भी शुक्रिया अदा करना चाहिए, जिन में से कई ऐसे हैं जो जलसा की व्यवस्था के लिए जलसा से पहले भी काम कर रहे हैं और बाद में भी वायंड अप के काम के लिए समय देते हैं। उन्हें न अपने व्यक्तिगत कार्यों के हर्जों की परवाह है, न वित्तीय नुकसान की परवाह करते हैं। कुछ मुझे मिले जिन्होंने बताया कि उन्होंने जलसा के कारण ड्यूटी के

कारण अगर छुट्टी नहीं मली तो अपनी नौकरी छोड़ दीं। न ही वे अपनी नींद और आराम को देखते हैं। एक चिंता के साथ वे काम करते हैं कि हम ने सेवा करनी है और जलसा की व्यवस्था को जिस सीमा तक हो सके सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश करनी है। इसलिए जहां जलसा में शामिल होने वालों से कहता हूँ, इस से पहले तो मैं सभी कार्यकर्ताओं बच्चों मेहमानों, लड़कियों, लड़कों, महिलाओं, पुरुषों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने स्वेच्छा से अपने आप को प्रस्तुत किया और एक सेवा के जुनून से छोटे से छोटा काम भी ख़ुशी से और बड़ी ज़िम्मेदारी से अंजाम दिया। यह काम वास्तव में एक ख़मोश तब्लीग़ होता है। ज़ाहिर में तो ये कार्यकर्ता काम कर रहे होते हैं लेकिन जो ग़ैर आते हैं उनके लिए भी यह तब्लीग़ का माध्यम बन जाते हैं कई लोगों की हिदायत का कारण बन जाते हैं। इसलिए अमेरिका से आए एक जमाअत के बाहर के दोस्त जो बंगाली हैं और बंगाली अहमदियों के साथ आए थे, शहीदुर्रहमान इन का नाम है कहते हैं कि सारा जीवन मुल्लाओं से झगड़ते रहे और जो इस्लाम उन को पेश किया गया उस ने उन्हें सुन्नी मस्जिदों से दूर रखा। चरमपंथ से उन्हें नफरत थी उनकी पत्नी एक नेक औरत हैं उन्होंने आज्ञा दी कि आप जमाअत अहमदिया के जलसा पर जाएं। इसलिए इस जलसा में आकर अपने दोस्तों के साथ शामिल हुए। लगभग 91 बंगाली अमेरिका से आए थे। उन्होंने जमाअत अहमदिया के व्यक्तियों का प्रशिक्षण, प्यार और सम्मान देखा तो वे कहते हैं कि जलसा देखने के साथ इस्लाम की ओर पुन: लौट आया हूं। जलसा के अंतिम दिन वह लोगों से अलग एक कुर्सी पर बैठे हुए थे और भीड़ की वजह से उन्होंने खाने पर जाना पसंद नहीं किया। भीड़ थी। इतने में एक सेवक उनके पास आया और उन्हें भोजन और पानी दिया और फिर इस बात का भी इंतज़ार किया कि वे खाना ख़त्म करें ताकि वह सेवक उन के खाने का डिब्बा भी फेंक दे। इस घटना ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने मुझे मुलाकात में बताया कि जलसा का उन पर बहुत गहरा प्रभाव है और इंशा अल्लाह तआला वह जल्द जमाअत में दाख़िल हो जाएंगे तो इस तरह जलसा से तब्लीग़ भी होती है और फिर यह है कि केवल एक सेवक की उच्च नैतिकता और उसकी मामूली सी सेवा उनके विचार को बदलने वाला बन गया। इस सेवक को तो शायद यह भी पता नहीं था कि वह अहमदी हैं या ग़ैर अहमदी। उसने तो एक भावना के अधीन सेवा की थी लेकिन यह सेवा इस ग़ैर में रूहानी परिवर्तन का माध्यम बन गई। इसी तरह कुछ राजनीतिक लोग भी हैं, क्षेत्र के रहने वाले लोग भी हैं, जो आम तौर पर जमाअत की सेवाओं को जानते हैं और स्वीकार भी करते रहते हैं उन पर भी हर बार जलसा की व्यवस्था का एक नया प्रभाव होता है कि इतनी बड़ी संख्या और शांत तरीके से लोग आमतौर पर बैठे होते हैं और कार्यकर्ता भी चुपचाप काम कर रहे होते हैं।

डेब शोलटे(Deb Schulte) यहाँ वान (Vaughan) संसद के सदस्य हैं। कहते हैं कि हमेशा की तरह आज भी बहुत प्रभावित हुआ हूँ। जलसा में इतने सारे स्वयं सेवक नज़र आते हैं जो इस जलसा को बहुत व्यवस्थित रूप से चला रहे हैं। फिर कहते हैं कि मेरे अनुमान के अनुसार आज यहां पच्चीस हज़ार से अधिक लोग जमा हैं और इस दृष्टि से जलसा का व्यवस्थित चलना स्वयं सेवकों के अथक मेहनत का परिणाम है। तो यह स्वयं सेवी कार्यकर्ता बड़ा प्रभाव डाल रहे हैं इस दृष्टि से सब कार्यकर्ताओं का हमें शुक्रिया अदा करना चाहिए। जहां वे मेहमान की सेवा निस्स्वार्थ होकर करते हैं वहाँ एक ख़ामोश मुबल्लिग़ बनकर अहमदियत का संदेश भी पहुंचा रहे हैं और प्रत्येक शामिल होने वालों को भी जितने लोग शामिल हुए जैसा कि पहले कहा उन्हें भी उनका आभारी होना चाहिए। अल्लाह तआला उन सभी कार्यकर्ताओं की सेवा की भावना को हमेशा बढ़ाता रहे और उन्हें इस सेवा का सबसे अच्छा इनाम दे और उन सभी की केवल यह ज़ाहरी सेवा न हो बल्कि ईमान और विश्वास भी बढ़ाता चला जाए और उनके कर्म भी अच्छे हों जो इस्लामी शिक्षा के अनुसार हैं।

इसी तरह एम.टी.ए के कार्यकर्ता हैं उनका जहां जलसा में शामिल होने वालों या कनाडा में रहने वालों को जो जलसा में शामिल नहीं हुए उन्हें धन्यवाद अदा करना चाहिए। वहाँ दुनिया में रहने वाले अहमदियों को भी आभारी होना चाहिए। कई कार्यकर्ता यहाँ कनाडा के स्थानीय वालनटियर हैं। कुछ काम करने वाले लंदन केन्द्र से आए थे। इन सब ने एक कोशिश से जलसा के तीनों दिन परिश्रम से जलसा का लाइव कार्यक्रम दिखाने के लिए प्रबंध किया। जैसा कि मैंने कहा कि लंदन से भी टीम तो आती है जब भी जहां जाऊं। एम.टी.ए की केंद्रीय टीम अप लिंक के लिए अपना डिश भी लेकर आई थी बजाय यहां किराए पर लेने के इस से बड़ा लाभ भी हुआ और हम समय के लिहाज़ से भी आज़ाद भी रहे क्योंकि जब किराए पर लो तो वक्त की पाबंदी भी करनी पड़ती है। कुछ समय अधिक हो जाए तो अधिक पैसे देने पड़ते हैं और कुल मिलाकर हमारी इस लिहाज़ से दस पंद्रह हज़ार डॉलर की बचत भी हो गई।

इसलिए हर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने अपने अपने क्षेत्र में जो काम किए हैं उनका लोग जमाअत के लिए आभारी होना चाहिए। इसी तरह कार्यकर्ताओं को भी आभारी होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने उन्हें सेवा की तौफीक दी है। अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम आभारी बनो मैं तुम्हारी शक्तियों और तुम्हारी क्षमताओं को बढ़ाऊँगा और अपनी बाकी नेअमतें भी प्रदान करूंगा। अल्लाह तआला जब "अज़ी दन्नकुम" कहता है तो किसी बात को अल्लाह तआला सीमित नहीं रखता। अल्लाह तआला सम्मानित करता है तो असंख्य सम्मानित करता है और हर दृष्टि से सम्मानित करता है और इसलिए मोमिनों का यही तरीका है कि हर सफलता पर हर अच्छी बात पर ख़ुदा तआला का आभारी बनें और जहां कमज़ोरियां देखें वहाँ अल्लाह तआला से रहम मांगें और तौबा करें।

कमज़ोरियां भी बड़ी व्यवस्था में होती हैं लेकिन मेहमानों ने जो कमज़ोरियों को अनदेखा कर के सामान्य रूप से हर काम के लिए सराहना की है सभी कार्यकर्ताओं को अपने और ग़ैर सब मेहमानों के लिए आभारी होना चाहिए। जैसे कमज़ोरियों का उल्लेख है तो जलसा के पहले दिन मेहमान नवाज़ी विभाग ने हाज़री का सही अनुमान नहीं लगाया। हालांकि एक दिन पहले मुझे बताया था कि हम बाईस हज़ार का खाना पकाएंगे। इतने लोग हम expect कर रहे हैं, जबकि बीस हज़ार का खाना पका जिस के कारण से विभाग के अपने अनुमान के अनुसार दो हज़ार लोगों को खाना नहीं मिला और इस की उन्होंने ने भी माफी चाही है लेकिन मेहमान भी जलसा सुनने के लक्ष्य को लेकर आए हुए थे। उस दिन या अगले दिन भी अगर कोई खाने में कमी हुई तो कुछ ने ख़ुश दिली से इसे बर्दाश्त किया। कोई शिकायत नहीं बल्कि कुछ दूसरों के सुधार का भी कारण बन गए। एक साहिब ने मुझे लिखा कि एक लंबी लाईन खाने की लगी हुई थी लेकिन काफी इंतज़ार के बाद पहले यह कहा गया खाना आ रहा है फिर उन्हें कहा गया खत्म हो गया है अब नहीं आएगा। कहते हैं कि मैं तो इस बात पर प्रशासन पर बड़ा ग़ुस्सा कर रहा था क्रोध था इतने में उनके आगे खड़े एक व्यक्ति ने कहा कि अल्हम्दो लिल्लाह भोजन समाप्त हो गया। मैंने यह कहा आप क्या कह रहे हैं? कहने लगे कि सूखी रोटी के कुछ टुकड़े मेरे पास हैं आएं अब हम उन्हें पानी में डुबो कर खा लें। अगर खाना मिल जाता तो यह सुन्नत जो थी हम पूरी न कर सकते थे। तो आज सुन्नत को भी पूरा कर लें। यह कहने वाले मुझे लिखते हैं। यह देखकर न सिर्फ मेरा ग़ुस्सा दूर हो गया बल्कि मुझे शर्मिंदगी भी हुई कि क्यों मुझे ग़ुस्सा आया। इस बात पर मैं बड़ा भावुक हो गया कि अल्लाह तआला ने कैसे कैसे लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को प्रदान किए हुए हैं।

इसलिए प्रशासन भी मेहमानों की आभारी हो जो ऐसे आचरण वाले, उच्च नैतिकता दिखाने वाले हैं। इस बार प्रशासन से यह अच्छा पहलू भी सामने आया है कि बजाय अपनी भूल छिपाने के अपनी कमज़ोरियों को छिपाने के उन्होंने अपनी कमज़ोरियों पर नज़र रखकर उन्हें व्यक्त भी कर दिया लेकिन केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि अब जलसा प्रशासन के पास अपनी लाल किताब जो है ये सब लिखें और भविष्य में बेहतर योजना भी करें। साथ ही मैं यह भी बता दूं कि यह जगह ज़ाहिरी तौर पर अब लग रहा है कि अधिक से अधिक अठारह उन्नीस हज़ार बीस हज़ार तक लोगों को संभाल सकती है इससे अधिक नहीं और अब जमाअत अल्लाह तआला की कृपा से फैल रही है तो बड़ी जगह का भी प्रशासन को सोचना चाहिए या कि जमाअत को सोचना चाहिए या कम से कम अगर कभी मुझे जलसा में बुलाना हो तो बहरहाल यह जगह अब अपर्याप्त है इसलिए इस बारे में ज़रूर सोचें।

प्रशासन ने जो अपनी कमज़ोरियों को ख़ुद व्यक्त किया है वह भी बता देता हूँ और इसमें कुछ शिकायतें मुझे पहले पहुँच चुकी थीं इसलिए वह सही भी हैं तो इसके अतिरिक्त भी कुछ हो तो लोग ख़ुद भी प्रशासन को लिखकर दे सकते हैं ताकि बेहतर प्रबंध हो सके।

पहली बात उन्होंने लिखी कि अरब मेहमानों के भोजन की गुणवत्ता में शिकायत मिली है कि खाने में मिर्च अधिक थी। अरबों के अनुसार नहीं थी। यह उन्हें तय करना चाहिए। फिर खाने की कमी को उन्होंने व्यक्त किया है जो पहले बता चुका हूँ।

फिर पुरुषों में खाना एक घंटा देरी से पहुंचा। एक तो यह है कि दूरी अधिक है। खाना यहाँ पकता है और फिर तीस किलोमीटर ले जाना पड़ता है फिर यह खाने के ट्रक ग़लती से पुरुषों के स्थान पर महिलाओं के हिस्से में चले गए जिसकी वजह से पुरुषों को तकलीफ उठानी पड़ी। ख़ैर पुरुष अगर तकलीफ उठाएं तो कोई हर्ज नहीं महिलाओं और बच्चों को भूखा नहीं रखना चाहिए था यह अच्छा हुआ कि वहाँ चले गए।

फिर प्रशासन का यह भी कहना है कि भोजन तैयार करने वाले कार्यकर्ताओं की कमी थी। इसे पूरा करना तो जमाअत का काम है। काम करने वालों की जमाअत में कोई कमी नहीं है। केवल प्रशासन को यह सोच रखनी होगी कि हम ने सेवा की भावना रखने वाले लोग रखने हैं। अपनी पसंद के लोगों को नहीं लेना इस सोच को भी बदलें और सेवा की भावना रखने वाले अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया में बहुत हैं। जलसा गाह के वाश रूमों में लोगों को बड़ा लंबा इंतज़ार करना पड़ा और लोगों की शिकायतें भी हैं प्रशासन ने ख़ुद भी महसूस किया बल्कि मुझे तो कुछ शिकायतें पहुंची हैं कि केवल इंतज़ार ही नहीं करना पड़ा बल्कि कुछ लोग तो रोगी भी होते हैं, दूसरों को भी, बड़ी तकलीफ दायक स्थिति का सामना करना पड़ा और मैंने विशेष रूप से एक दिन पहले उन्हें इस बारे में पूछा भी था कि उसका सही प्रबंध है कि नहीं। जो मुझे बताया गया था उसके अनुसार तो मुझे लगता है कि सही प्रबंध नहीं था। अब भविष्य में अगर वहां स्थायी प्रबंध नहीं है तो अस्थायी व्यवस्था करनी चाहिए।

लंगर घर में ऑडियो वीडियो का प्रबंधन नहीं था यह तो प्रशासनिक ग़लती है और हालांकि बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है कि जो कार्यकर्ता जलसा सुनने नहीं जा सकते उनके जलसा सुनने की व्यवस्था होनी चाहिए। फिर कहते हैं कि पुरुषों के पिछले भाग में साफ आवाज़ नहीं थी लेकिन जब मेरा ख़ुत्बा या ख़िताब थे तो मुझे यह बताया गया कि उस समय मेरे भाषण की आवाज़ तो सुनने में बेहतर थी अगर मेरी सूचना ग़लत है तो जो लोग पीछे बैठे थे वे मुझे बता दें क्योंकि मेरे अनुसार तो आवाज़ पहले बेहतर नहीं थी और फिर हमारे कुछ कार्यकर्ताओं ने इसे बेहतर करने की कोशिश की।

इसी तरह अरबों के लिए अनुवाद का प्रबंध था लेकिन उन्हें सूचना नहीं की गई। कुछ अरब मुझे मिले और उन्होंने कहा कि हम पहले दिन ख़ुत्बा से वंचित रहे। अगले दिन उन्हें पता लगा हालाँकि यह तो प्रशासन को इतना अनुभव हो जाना चाहिए कि अनुवाद के लिए बार बार विभिन्न भाषाओं में जिन भाषाओं का अनुवाद हो रहा है वहाँ घोषणा होनी चाहिए कि अमुक स्थान से अपनी अनुवाद की एड जो है वे ले लें और बोर्ड पर भी लिखा होना चाहिए एंट्रेंस पर भी लिखा होना चाहिए।

अब मैं कुछ प्रतिक्रियाएं मेहमानों और अख़बारों की वर्णन करता हूँ जो फिर हमारा ध्यान धन्यवाद के विषय की ओर फेरते हैं। कैसे अल्लाह तआला ख़ुद लोगों के दिलों में ख़ुदा डालता है। हमारी कोशिश तो इन परिणामों के मुकाबला में न होने के बराबर हैं।

पहले कुछ अपने सीरियन अरब अहमदी दोस्तों की प्रतिक्रियाएं वर्णन करता हूं। पहली बार उन्हें इतने बड़े जलसा में शामिल होने का और स्वतंत्रता से इबादत करने का मौका मिला क्योंकि वहाँ तो प्रतिबंध थे। जब हालात ख़राब नहीं थे तब भी वह आज़ादी नहीं थी और हालात ख़राब होने के बाद तो कई वर्षों से बेचारे पिस रहे थे।

एक अहमदी दोस्त अहमद दरवेश साहिब कहते हैं कि यह मेरा पहला जलसा था। कहते हैं जब मैंने जलसा में प्रवेश किया और समय के ख़लीफा की उपस्थिति देखी तो मुझे लगा कि मैं इस्लाम में दाखिल हुआ हूँ। कहते हैं मेरे जीवन में सबसे बड़ा बदलाव आया है और वह यह है कि मेरी नमाज़ विनम्रता और विनय से परिपूर्ण हो गई है। इसलिए यह वह परिवर्तन है, जो हर अहमदी में जलसा में शामिल हो कर आनी चाहिए बस कुछ ही दिनों के लिए नहीं बल्कि स्थायी। यह कहते हैं कि मैं कनाडा के मेहमान को भी लेकर आया था सिम्पसन नामक व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ आया था। यह व्यक्ति पहले ईसाई था लेकिन अब नास्तिक हो गया है। जलसा में भाग लेने के बाद उसने कहा कि मैंने जीवन में कभी प्यार भाईचारा और शांति और सुरक्षा के बारे में इस तरह के ईमानदार और सच्ची बात कभी नहीं सुनी और मुझे इस तरह के इस्लाम के बारे में जानकर बहुत ख़ुशी हुई अल्लाह तआला करे यह ख़ुशी उस के दिल को खोलने का माध्यम भी बन जाए।

इसी तरह एक सीरियन अहमदी अल्हाज अब्दुल्लाह साहिब कहते हैं कि जलसा सालाना के तीन दिन ऐसे थे जिन्हें जीवन भर नहीं भुलाया जा सकता। दुनिया की सबसे उच्च जमाअत के हज़ारों लोग कनाडा में इस दौर में उत्कृष्ट प्रबंध के साथ इकट्ठे हुए थे। फिर कहते हैं जलसा के प्रबन्ध, स्वागत व्यवस्था हर ज़रूरी चीज़ की बहुतायत, यहां तक कि बच्चों के उछल कूद को भी ध्यान में रख कर विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए असाधारण थी। जलसा का वातावरण प्यार और भाईचारा की भावनाओं से परिपूर्ण था। हज़ारों लोगों को बुलाना और उनके परिवहन और भोजन की व्यवस्था करना अपने आप में एक असाधारण बात है। फिर कहते हैं भाषणों और उनके अनुवाद का जो विभाग था वह भी बहुत अच्छा था। कहते हैं मैंने एक पत्रकार टीम और एक मुस्लिम परिवार को आमंत्रित किया था। वह सब जलसा के उत्तम प्रबंध को देखकर हैरान रह गए और उन्होंने विशेष रूप से जो मेरा आख़िरी दिन का खिताब था उसे बड़ा पसंद किया और अहमदियों की अपने इमाम के लिए मुहब्बत इन मेहमानों के लिए आश्चर्यजनक बात थी।

इसी तरह अब्दुल कादिर साहिब कहते हैं कि मैंने पहली बार देखा कि जलसा का कितना बड़ा काम होता है और कैसे प्रत्येक कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में शहद की मक्खी की तरह बिना किसी शोर और मुश्किलें पैदा किए काम करता है। प्रत्येक चाहता था कि उसे सेवा का मौका दिया जाए विशेष रूप से जब उन्हें पता चलता कि अरबी हूँ तो मेरे साथ असामान्य व्यवस्था के साथ पेश आते थे।

फिर एक रीम मुस्तफा साहिबा वर्णन करती हैं कि जलसा की इतनी बड़ी संख्या के बावजूद बहुत अधिक व्यवस्थित था। मुझे सबसे अधिक इस आध्यात्मिकता का एहसास हुआ, जो लोगों के चेहरों पर नज़र आ रही थी। अल्लाह करे कि यह रूहानियत हमेशा दिखती रहे। हम उन सभी के आभारी हैं जिन्होंने इस जलसा के सफल आयोजन, भाषणों के अनुवाद और अन्य कार्यों में योगदान दिया। ख़ुदा तआला की कृपा से हमारी रूहानियत में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

फिर सलमा जबूबी साहिबा वर्णन करती हैं कि जलसा के अनुशासन और व्यवस्था को देखकर यह कहा जा सकता है कि जमाअत एक शरीर की तरह एकजुट और एक दूसरे के सहयोग से भरी हुई है। हम परिवहन विभाग के आभारी हैं जिन्होंने जलसा पर लाने और वापस घर छोड़ने का अनुकूल रंग में प्रबन्ध किया। जलसा में विभिन्न देशों और विभिन्न रंगों के लोग मिलकर सिर्फ एक लक्ष्य के लिए काम कर रहे थे और वह यह कि इस्लाम और शांति का संदेश दुनिया तक पहुंचाया जाए।

हुसैन आबदीन साहिब बताते हैं कि सालाना जलसा में बिताए हुए पल मेरे जीवन के सबसे खूबसूरत पल हैं। मैं टीवी पर विभिन्न जलसा सालाना देखा करता था और दुआ करता था कि हे ख़ुदा कभी मुझे भी समय के ख़लीफा के साथ जलसा में भाग लेने की तौफ़ीक़ मिले लेकिन मैं सोच नहीं सकता था कि मेरी दुआ इतनी जल्दी स्वीकार हो जाएगी और ख़ुदा तआला मुझ इस से भी अधिक प्रदान करेगा जितना मैंने मांगा था। मैं जलसा सालाना के स्टेज के सामने बैठा हुआ था और ऐसे में इन कठिन दिनों के, अपने यातना दायक लम्हों की, कहानी मेरी आँखों के सामने आ रही थी कि जो कि मैंने कठोर परिस्थितियों में सीरिया और तुर्की में बिताए और इस समय मेरा दिल ख़ुदा तआला की प्रशंसा से भर गया और मैंने कहा कि एक वह यातना दायक दिन थे और एक यह दिन है कि समय के ख़लीफा के सामने बैठा हूँ। यह केवल ख़ुदा तआला की कृपा है।

एक सीरियन दोस्त फ़राज़ साहिब कहते हैं मैंने पहली बार जमाअत के किसी जलसा में भाग लिया है तो लोगों को देखकर मुझे तो भय छा गया। (शायद अनुवाद करने वाले ने भय शब्द लिख दिया है या उन्होंने सच कहा था वास्तव में तो मेरा मानना है कि प्यार के शब्दों में उन्होंने उल्लेख किया है।) फिर ये लोग केवल कनाडा से ही नहीं बल्कि विभिन्न क्षेत्रों से आए हुए थे तथा यह किसी एक जाति से संबंध न रखते थे बल्कि विभिन्न रंगों और राष्ट्रों से उनका संबंध था उसी तरह जलसा में नई तकनीक का उपयोग और उच्च प्रबंध और दर्शकों का विभिन्न मुद्दों में प्रशासन के निर्देशों का ध्यान रखना और आज्ञाकारिता का प्रदर्शन बहुत ईमान वर्धक था और जो बात मेरे लिए सबसे बड़ी ख़ुशी का कारण ठहरी वह ख़लीफतुल मसीह की उपस्थिति और उनके भाषण थे जिनसे मैं तीनों दिन लाभान्वित हुआ।

बहरहाल यह कुछ अहमदी लोगों की प्रतिक्रयाएं थी जो मैंने बयान किए। नए अहमदी भी और पुराने भी सीरिया से वहां के हालात की वजह से हिजरत कर के यहाँ आए हैं।

दूसरों की भी प्रतिक्रयाएं हैं जो वर्णन करता हूँ। जमाअत का परिचय और तब्लीग़ के रास्ते इन माध्यमों से खुलते हैं।

जर्मन राजदूत यहां आए थे जो मुझे मिले। उन्होंने बताया कि चार सप्ताह पहले यहाँ आया हूँ। जमाअत का अधिक परिचय नहीं था यह विभिन्न देशों में रहते हैं। कहते हैं कि मैंने आज तक इस्लामी शिक्षाओं के बारे में ऐसा व्यापक संबधोन नहीं सुना।(उन्होंने मेरा अंतिम भाषण सुना था।) मैंने देखा है आपकी बड़ी सकारात्मक

दृष्टि है। फिर मेरे बारे में कहते हैं कि वास्तविक इस्लाम को बयान किया जो शांति और न्याय और प्रेम की शिक्षा देता है और हर शब्द में एक तथ्य नज़र आ रहा था। काश दुनिया का मीडिया जितना समय इराक के बग़दादी और ISIS के तब्लीग़ को देता है अगर शांति के इस राजदूत को दे तो दुनिया में सच्ची शांति स्थापित हो जाए। फिर कहते हैं कि हर वाक्यांश उनका सत्य पर आधारित था और विश्व शांति की स्थापना के लिए एक दर्द था। कहते हैं मैं भी इस संदेश को जहां तक मेरे लिए संभव हुआ आगे फैलाऊंगा तो इस तरह अल्लाह की कृपा से ग़ैर लोग भी हमारे राजदूत बन जाते हैं।

मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं जुडी (Judi) साहिबा जिन्हें यहां रहने वाले लोग जानते हैं वह भी कहती हैं कि तुम्हारे ख़लीफा ने हालात के अनुसार तुम्हारे सुपुर्द एक काम किया है कि वह यह कि मुहब्बत सबके लिए नफरत किसी से नहीं का संदेश पूरी दुनिया में फैलाएंगे और इस से भी बढ़ कर यह भी कि मुसलमान और ग़ैर मुसलमान अपने संबंधों को प्यार के साथ मज़बूत करें और सब निष्पक्षता और न्याय से काम लें क्योंकि अगर ऐसा न हुआ तो तीसरा विश्व युद्ध होगा और यह बात बहुत स्पष्ट नज़र आ रही है। आम जनता और राजनीतिज्ञ दोनों को मिलकर काम करना होगा तो दुनिया में शांति और सुरक्षा कायम होगी। कहती हैं कि हम में से हर एक मुसलमान और ग़ैर मुसलमान दूसरों को यह संदेश पहुंचना चाहिए ताकि लोगों को पता चले कि उग्रवादी समूहों के कार्यों का इस्लाम से कोई लेना देना नहीं है और यह उग्रवादी लोग ही हैं जो अपने उद्देश्य के लिए दूसरों को बदनाम कर रहे हैं।

एक चर्च सेवन डे ओनजलिसट (Seventh-Day Evangeliset) से संबंधित मेहमान आए हुए थे कहते हैं कि आज मेरा दिल बहुत ख़ुश है कि ख़लीफतुल मसीह ने अपने संबोधन में शांति और सुरक्षा के बारे में बताया है। अब ज़रूरी है कि लोग अहमदिया जमाअत को पहचानें। जो जमाअत अहमदिया काम कर रही है इसका लोगों को पता हो। मुसलमान वह नहीं है जो मीडिया लोगों को बताता है। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा तो बड़ी शांति वाली है।

बेलेज़ से एक वहाँ के मेयर आए थे। यू.के में भी आ चुके हैं मुझे कहते हैं कि आप के इस प्रकार के भाषण का बड़ा गहरा असर हुआ है कि जिस तरह अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर प्रकाश डाला है तो इससे मुझे पता चला कि ख़लीफतुल मसीह न केवल अहमदियों के लिए मार्ग दर्शन का कारण हैं बल्कि सारी दुनिया के लिए हिदायत का माध्यम बन सकते हैं। ख़लीफतुल मसीह ने जो बातें अपने संबोधन में वर्णन की हैं मैं उन्हें कभी भूल नहीं पाऊंगा।

एक मेहमान यहाँ के मेयर हैं वह जमाअत को यह संदेश दे रहे हैं कि हमारे लिए यह संदेश विशेष अवसर है। हमें अपनी आध्यात्मिकता में प्रगति करनी चाहिए और सभी मनुष्यों का सम्मान करें। यह हमें संदेश मिला है बावजूद इसके कि धर्म क्या है। यह बात हमें याद रखनी चाहिए कि आप के ख़लीफा ने सिखाया है कि शांति को दुनिया में स्थापित करो। हम सभी का कर्तव्य है कि अपनी ज़िम्मेदारी को अदा करें और योगदान दें।

बरहमटन (Barmpton) से आए एक मेहमान कहते हैं कि जलसा में मुझे सिर्फ एक संदेश मिला कि शांति स्थापित करो। फिर एक मेहमान ने मेरा अंतिम भाषण सुना और कहते हैं कि यह आश्चर्यजनक था। मेरे पास अपनी भावनाओं को वर्णन करने के लिए शब्द नहीं। एक महिला एम.पी यास्मीन अतंसी साहिबा कहती हैं कि ख़लीफा का महिलाओं से संबोधन बहुत अच्छा लगा, ख़ासकर एक बात कि एक माँ पूरे परिवार के लिए बतौर बुनियाद होती है और सारे समाज को मज़बूत बनाती है।

एक महिला मेरी लेन से कहती हैं कि यह मेरा नौवां जलसा है लेकिन आप के ख़लीफा का ख़िताब सुनने के लिए बेताब थी। बड़ा इंतज़ार था। फिर कहती हैं कि यहां हर एक को दूसरे से अदब से पेश आते हुए देखा और इस जलसा के महत्त्व का भी सबको अनुभव था। सुरक्षा व्यवस्था भी बहुत उच्च थी। साउंड सिस्टम भी बहुत अच्छा काम कर रहा था और वीडियो निगरानी भी उच्च किस्म की थी। अनुवाद के लिए हेडसेट का उपयोग देखकर मुझे ख़ुशी हुई क्योंकि इसके बिना हमारा जलसा में आने का लक्ष्य पूरा नहीं किया जा सकता था क्योंकि जमाअत अहमदिया के इमाम की फिर मैं बातें न सुन सकती। कहती हैं हमेशा की तरह आप लोग मेहमानों से बड़े अदब से पेश आते हैं सम्मान से पेश आते हैं, हालांकि हम इसके हकदार नहीं हैं हम इस बात पर आप सभी के आभारी हैं। हज़ारों अहमदियों को शांति और प्यार में समर्पित देखकर बहुत प्रभावित हुआ और यह दृश्य यूरोप और अरब में नीगेटयूटी के विपरीत था जलसा के दर्शकों की एकता को देखकर मुझे संतोष महसूस हुआ।

जलसा सालाना पर जो भी मेहमान आते हैं अल्लाह तआला की कृपा से अच्छा प्रभाव लेकर जाते हैं। विदेशों से भी कुछ मेहमान आए हुए थे एक दो का मैंने उल्लेख किया और बड़ी अच्छी धारणा लेकर गए हैं। विशेष रूप से यहां के सेंट्रल अमेरिका और साऊथ अमेरिका के लोग हमारे जलसों पर आते हैं और जलसा का जब वातावरण देखते हैं तो इस्लाम के बारे में जो ग़लतफहमियां हैं वे दूर हो जाते हैं और इन देशों में हमारे मिशन क्योंकि अब नए नए शुरू हुए हैं। कुछ अहमदी अब कुछ वर्षों पहले, एक दो तीन साल पहले बैअतें की हैं। जमाअतें बनी हैं कुछ कठिनाइयां और दिक्कतें भी सामने आती हैं तो कुछ उच्च अधिकारियों के जलसों में आने की वजह से तथ्य देखने की वजह से हमें फिर वहाँ काम करने में सुविधा हो जाती है और उनका सहयोग प्राप्त हो जाता है। ज्यादातर लोग तो इन देशों से यू.के के जलसा में आते हैं लेकिन कुछ लोग यहां भी आए हुए थे। इसलिए जलसा इस लिहाज़ से भी तब्लीग़ के रास्ते खोलता है। बहरहाल जलसा सालाना जहां अपनों के लिए आध्यात्मिक सुधार के समान पैदा करता है वहाँ दूसरों के लिए भी जमाअत का परिचय और संबंधों का माध्यम बनता है। इस्लाम की असली तस्वीर दुनिया को पता चलती है।

पिछले कुछ समय से मुस्लिम देशों की स्थिति और इसकी वजह से दुनिया के हालात जो सामने आ रहे हैं इस ने मीडिया की नज़र भी जमाअत अहमदिया की ओर फेरी है। पहली बात तो यह है कि अल्लाह तआला की कृपा है कि उसने इस ओर लोगों का ध्यान दिलवाया क्योंकि पहले तो बावजूद कहने के भी ये लोग नहीं आते थे लेकिन इसके बाद हमारे युवा जो हैं उनकी भी बड़ी भूमिका है जिन्होंने मीडिया के साथ संबंध बनाए और संपर्क किया अल्लाह तआला की कृपा से बहुत बड़े पैमाने पर किए। कनाडा के मीडिया टीम में भी जो बहुमत युवा है बड़े परिश्रम से प्रेस और मीडिया से संपर्कों को बढ़ाया है। मुझे यह पता नहीं था कि यहाँ कनाडा में भी हमारे युवा इस सीमा तक इसमें योगदान कर रहे हैं। यह तो यहाँ आकर देख कर मुझे पता चला कि अल्लाह तआला की कृपा से माशा अल्लाह युवा बड़ी मेहनत से काम कर रहे हैं। अक्सर लोगों को मैंने यहाँ काम करते देख। तो यह भी एक तब्लीग़ है जो प्रेस के माध्यम से हमारे युवा कर रहे हैं। उनमें बड़ा उत्साह है कुछ बड़े अखबार और चैनल से संपर्क करते रहे। कुछ चैनल तो बड़ी अच्छी प्रतिक्रिया देते रहे। कुछ कह देते थे कि हमें धर्म से कोई रुचि नहीं इसलिए हम तुम्हारे जलसे के समाचार प्रकाशित नहीं कर सकते हैं या आप के ख़लीफा अगर आए हैं तो हमें इस से कुछ सम्बंध नहीं हम कवरेज के लिए नहीं आ सकते। कुछ युवा इस बात से परेशान भी हुए लेकिन अल्लाह तआला भी उनके ईमानों को मज़बूत करने के नज़ारे दिखा देता है, समान पैदा कर देता है। जैसे एक अख़बार या चैनल से उन्होंने संपर्क किया तो उसने उदासीनता व्यक्त की। एक सीरियन ने भी उल्लेख किया कि मैं(पत्रकार) ले कर आया शायद यह वही पत्रकार टीम थी जो यह युवा चाहते थे कि यह अपना प्रतिनिधि अवश्य जलसा में लेकर आएं ताकि अहमदियत का सही संदेश इस्लाम का सही संदेश देश में पहुंचे तो जैसा कि मैंने कहा कि अल्लाह तआला अपने काम करता है। इस चैनल ने शायद सीरियन रफयूजीज़ पर कोई डॉक्यूमेंट्री बनानी थी। जब वह उसके लिए सीरियन रिफयूजीज़ की खोज में निकले तो संयोग से बल्कि कहना चाहिए कि अल्लाह तआला यह चाहता था तकदीर ही यही थी उनका संपर्क जिन सीरियन से भी हुआ वह अहमदी थे। उन्होंने कहा कि हमारा जलसा हो रहा है वहाँ आ जाओ और वहीं सब कुछ पता चल जाएगा वहीं हम बात करेंगे। तो इस तरह इस मीडिया को भी जो पहले इनकार कर चुका था वहां आना पड़ा। तो बहरहाल अल्लाह तआला भी जमाअत का व्यापक परिचय किसी न किसी माध्यम से करवा रहा है और मीडिया की भी जो भूमिका दुनिया में आजकल है इस से बड़े व्यापक रूप से जमाअत अहमदिया का परिचय हो रहा है और जो अहमदी इसके लिए सेवा करते हैं मैं उन्हें भी कहता हूँ कि अधिक मेहनत और विनम्रता से इस काम को बढ़ाते जाएं। हमेशा याद रखें कि अल्लाह तआला की कृपा है जो हमेशा सम्मिलित होती है और इसी कृपा को हमेशा तलाश करना चाहिए।

अख़बार, रेडियो और चैनलों के मीडिया के कुछ लोग पहले दिन जुम्अ: को आए जो जलसा का पहला दिन था। एक छोटी सी प्रैस कांफ्रेंस भी थी या इन्ट्रविू लिया उन्होंने इस की बड़ी अच्छी कवरेज हुई है और जमाअत का परिचय हुआ इस्लाम की वास्तविक शिक्षा बताई गई। उन्हें मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का संदेश पहुंचाया। मेरी तो यह कोशिश होती है कि वर्तमान हालात पर बात हो या

जमाअत अहमदिया पर जिस तरह भी हो किसी तरह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आगमन से जोड़ों ताकि इस्लाम की सच्चाई उन लोगों को पता चले।

बहरहाल मीडिया ने जो जलसा की कवरेज दी है उसका सार यह है कि कनाडा के सबसे बड़े तीन अखबारों Toronto Star, The Globe and Mail और National Post ने व्यापक पैमाने पर जलसा की ख़बर प्रकाशित कीं। उनके विचार में 3.9 लाख से अधिक लोगों तक यह संदेश पहुंचा। तीन बड़े अख़बारों के अतिरिक्त पच्चीस से अधिक अन्य प्रमुख समाचार पत्रों के माध्यम से पांच लाख से अधिक लोगों तक यह संदेश पहुंचा। उर्दू के आठ, पंजाबी के दस स्पेनिश अरबी और बंगाली के तीन तीन अख़बारों के माध्यम से तीन लाख से अधिक लोगों तक संदेश पहुंचा। कनाडा का सबसे बड़ा रेडियो स्टेशन 680News द्वारा दर्शकों की संख्या कहते हैं अढ़ाई लाख है उनमें जलसा की खबर पहुंची। सामाजिक लिंक के द्वारा जिनमें ट्विटर, इंस्टा ग्राम, फेसबुक और periscope शामिल है उसके द्वारा उनका मानना है बीस लाख से अधिक लोगों तक संदेश पहुंचा। फिर सीसीटीवी, ग्लोबल टीवी, सिटी टीवी, राज़र्स टीवी और सीबीसी सहित सोलह से अधिक मुख्य धारा के टीवी चैनलों ने जलसा के हवाले से खबर प्रसारित की जिससे उनके विचार में पच्चीस लाख लोगों तक संदेश पहुंचा। उर्दू, पंजाबी, बंगाली, अरबी घानियन और अन्य भाषाओं में टीवी प्रसारण के द्वारा जलसा सालाना की ख़बर एक लाख लोगों तक पहुंची। बहरहाल समग्र रूप से टीवी के माध्यम से यह कहते हैं 6.6 लाख लोगों तक समाचार पत्रों के माध्यम से 2.8 लाख लोगों तक, रेडियोज़ के माध्यम से 35 लाख लोगों तक सोशल मीडिया के माध्यम से 2.8 लाख लोगों तक और समग्र रूप से उनके विचार में यह जो रिपोर्ट है उसके अनुसार संदेश सोलह लाख लोगों तक पहुंचा तो बहुत सावधान अनुमान भी लगाएं तो कम से कम भी दस लाख तक तो जलसा को लेकर जमाअत का परिचय और संदेश पहुंचा होगा। जो ख़बरें मैंने मीडिया में देखी हैं या सुनी हैं इस पर उन्होंने बड़े ईमानदारी से ख़बर दी है जमाअत की खबर दी है जलसे की खबर दी है हमारी शिक्षा की खबर दी है।

इसलिए यह तो अल्लाह का काम है जो वह कर रहा है और जमाअत का परिचय फैल रहा है लेकिन साथ ही हमारा ध्यान भी इस ओर फेरता है कि यह बात कि हम इन्हीं बातों से ख़ुश न हों बल्कि अपनी आध्यात्मिक हालत और अल्लाह तआला से संबंध को बढ़ाएं। हर इस बात को बुरा समझें जिसे अल्लाह तआला ने बुरा कहा है और हर बात का पालन करें, जिसे करने के लिए अल्लाह तआला ने आदेश दिया है। यदि अल्लाह तआला सेवा का मौका दे रहा है तो उसे इलाही इनाम जानें और सारे उहदेदार भी और सेवा करने वाले भी अपने कर्तव्यों को तक़वा पर चलते हुए अंजाम देने की कोशिश करें और सारे जलसा में शामिल होने वाले और सुनने वाले भी अपनी समीक्षा कर लें कि क्या हम ने जलसा में जो सुना है उसे अभी तक अपनाया है? जीवन का हिस्सा बनाने की कोशिश कर रहे हैं और यह भी समीक्षा लें कि कैसे हम नेक बातों को हमेशा अपनाए रखना है और इसके लिए प्रयास करना है। यह अल्लाह तआला का वास्तविक धन्यवाद अस्थायी और क्षणिक धन्यवाद न हो।

इसलिए इस बात को हमेशा अपने सामने रखें और यही बात है जिसे फिर अल्लाह तआला अपने फज़्लों से आगे बढ़ता चला जाता है और उन्हें सम्मानित करता है। अल्लाह उन बातों पर अनुकरण करने के लिए हर अहमदी को तौफीक़ दे कि वास्तव में ख़ुदा तआला को पहचानने वाले और उस से संबंध जोड़ने वाले हों।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

अपने माँ बाप से ऐसे ही सामान (दहेज) लेना चाहती हैं और इस तरह का प्रदर्शन वास्तव में दिल को दु:ख पहुँचाने वाली चीज़ बन जाता है। जो कुछ भी दिया जाये बक्सों में बंद करके दिया जाये। हमारे घरों में यही तरीक़ा है। हाँ यह आवश्यक है कि वह बक्स जिनके हवाले किये जायें उनको दिखाए जायें कि ये-ये चीज़ें मौजूद हैं... ये नुमाइश (प्रदर्शन) नहीं बल्कि रसीद है"।

(रिपोर्ट मज्लिस मुशावरत, 1942 ई. पृ. 24)

सेहरा बाँधना

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो सेहरा बाँधने के बारे में फ़रमाते हैं :-

''यह तो आदमी को घोड़ा बनाने वाली बात है। वास्तव में ये रिवाज हिन्दुओं से मुसलमानों में आया है"। (अलफ़ज़ल, 4 जनवरी 1946 ई.)

फ़िर फ़रमाया :- ''सेहरा बाँधना बुरी रस्म है"।

बड़े-बड़े मेहर रखवाना

ऐसे मेहर निर्धारित कराना जो इन्सान की हैसियत और ताक़त से बाहर हों एक रस्म की हैसियत रखता है। अल्लाह तआला साफ़ फ़रमाता है لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا (ला युकल्ले फ़ुल्लाहो नफ़्सन इल्ला वुसअहा) अर्थात अल्लाह तआला किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से अधिक भार डालना नहीं चाहता। बस अपना नाम करवाने के लिये बड़े-बड़े मेहर नहीं रखने चाहिये। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो वर्णन किया करते थे कि छ: माह से लेकर एक साल की आमदनी के बराबर मेहर रखा जा सकता है।

मेहर बख़्शवाना (माफ़ करवाना)

हमारे मुल्क (देश) में औरत पर बहुत ज़ुल्म किया जाता है। उस का हक़ मेहर अदा नहीं किया जाता बल्कि कई बार मरते समय औरतों से माफ़ करवा लिया जाता है। औरत भी जानती है कि मेहर मिलना तो है नहीं इस लिये वह मुफ्त का एहसान अपने पति पर कर देती है। एक दोस्त ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से पूछा कि हुज़ूर ! एक औरत अपना मेहर नहीं माफ़ करती। आपने फ़रमाया :-

''यह औरत का हक़ है उसे देना चाहिए। अव्वल तो निकाह के वक़्त अदा करदे या फिर बाद में अदा कर देना चाहिये"।

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द छ:, पृ. 391)

मोटर, स्कूटर, भारी दहेज माँगना

आज कल पढ़े लिखे लोगों में यह रिवाज हो गया है कि लड़की वालों से मोटर या स्कूटर की माँग करते हैं या भारी दहेज की इच्छा करते हैं। ये सब बुरी रस्में हैं। लड़की वालों पर अनावश्यक बोझ डालना ग़ैर इस्लामी प्रथा है। यह एक तरह से शादी की क़ीमत मांगना है जो किसी भी तरह जायज़ नहीं, और नापसंदीदा है।

मेंहदी की रस्म

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ अय्यदहुल्लाहो तआला फ़रमाते हैं :-

''इस बात में कोई बुराई नहीं कि शादी के अवसर पर लड़की की सहेलियाँ इकट्ठी हों और ख़ुशी मनायें। एक ख़ास हद तक इसको रखा जाये तो इसमें हर्ज नहीं, लेकिन अगर इसको रिवाज बना लिया जाये कि बाहर से दूल्हा वाले ज़रूर मेंहदी लेकर चलें तो ज़ाहिर है कि इसमें ज़रूर बनावट पायी जाती है। लड़की की मेंहदी घर पर ही तैयार होनी चाहिये। इस पर एक छोटी सी बारात बनाने का रिवाज बुराई पैदा करेगा।

शादी के अवसर पर परदे का इंतिज़ाम और वीडियो ग्राफ़ी

''जो बुरी आदतें राह पकड़ रही हैं उनमें से एक परदे में न रहना आम बात हो गयी है जो वास्तव में शरीअत के हुक्मों की हदों को पार करने के निकट पहुंच गयीं हैं क्योंकि इज़्ज़तदार मेहमानों में बहुत सी शर्म वाली व परदे वाली औरतें होती हैं। बेधड़क, अंट-संट फोटो ग्राफ़रों या ग़ैर ज़िम्मेदार और ग़ैर सगे सम्बंधी पुरुषों को बुलाकर फ़ोटो खिंचवाना और ये परवाह न करना कि ये मामला सिर्फ़ खानदान के क़रीबी लोगों तक सीमित है, इस बारे में खोलकर नसीहत करना चाहिए कि आप ने अगर अपने घर के अंदर कोई वीडियो आदि बनानी है तो सर्व प्रथम जानकारी दे दी जाये और सिर्फ़ सीमित पारिवारिक सीमा में ही शौक़ पूरे किए जाऐं"।

(ख़ुत्बा जुमा, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ)

(शेष.....)(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIN 01885 Vol. 1 Thursday 17 November 2016 Issue No. 37

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 1 का शेष

ख़ुदा के साथ हमें इसमें दखल नहीं और जैसा कि अभी बयान कर चुका हूं या ज्ञान मात्र ख़ुदा तआला को है कि उसके निकट भी अक्ली दलीलों और मआरिफ़ और उत्कृष्ट शिक्षा और आसमानी निशानों के किस पर अभी इतमाम हुज्जत नहीं हुआ। हमें दावे से कहना नहीं चाहिए कि अमुक व्यक्ति पर इतमाम हुज्जत नहीं हुआ हमें किसी के भीतर का ज्ञान नहीं है और चूंकि प्रत्येक पहलू की दलीलें पेश करने और निशानों के दिखलाने से ख़ुदा तआला के हर एक रसूल का यही इरादा है कि वह अपनी हुज्जत लोगों पर पूरी करे और इस बारे में ख़ुदा तआला भी उसका समर्थन करने वाला रहा इसलिए जो व्यक्ति यह दावा करता है कि मुझ पर हुज्जत पूरी नहीं हुई वह अपने इनकार का ज़िम्मेदार आप है और इस बात का सबूत पहुचाना उसी की गर्दन पर है और वही इस बात का जवाब देने वाला होगा कि बावजूद अक़्ली दलीलों और मआरिफ़ और उत्कृष्ट शिक्षा और आसमानी निशानों और प्रत्येक प्रकार के मार्गदर्शन के क्यों उस पर हुज्जत पूरी नहीं होई यह बहस केवल व्यर्थ और निरी बकवास है कि जिस पर हुज्जत पूरी नहीं हुई वह बावजूद इसके कि उसने इस्लाम में सूचना पाई इनकार की हालत में मुक्ति पा जाएगा बल्कि ऐसी बहस में ख़ुदा तआला की उपेक्षा है क्योंकि जिस समर्थ ताकतवर ने अपने रसूल को भेजा उसका इस में अपमान है और इसी प्रकार वादा का देरी से होना अनिवार्य होता है कि बावजूद इसके कि इस ने यह वादा भी किया कि मैं अपनी हुज्जत पूरी करूंगा। फिर भी वह इनकार करने वालों पर अपनी हुज्जत पूरी नहीं कर सका और उन्होंने उसके रसूल की तक़ज़ीब भी की और फिर मुक्ति भी पा गए और हम जब ख़ुदा तआला के निशानों को देखते हैं जो उसने इस्लाम के लिए दिखाए और फिर हम अक़्ली दलीलों और मआरिफ़ को देखते और असंख्य गुण इस्लाम में पाते हैं जो अन्य जातियों को धर्मों में नहीं और ख़ुदा तआला की तरफ तरक्की करने का दरवाज़ा केवल इस्लाम में ही खुला देखते हैं और दूसरे धर्मों को ऐसी अवस्था में पाते हैं कि वह या तो सृष्टि पूजा में गिरफ्तार हैं और या ख़ुदा तआला को समस्त चीज़ों का सृष्टा और सारी बरकतों का स्रोत नहीं मानते तो हमें ऐसे लोगों पर अफसोस आता है जो इन बेहूदा बातों को दुनिया में फैलाते हैं कि जो व्यक्ति इस्लाम पर सूचना तो रखता हो मगर उस पर इतमाम हुज्जत न हो वह मुक्ति पाएगा यह स्पष्ट है कि सही घटनाओं को न मानना यद्यपि जानबूझकर न हो तब भी वह नुकसान पंहुचाने वाला होता है। जैसे हकीमों ने यह विज्ञापन दिया है कि आतशक बीमारी वाली औरत के पास मत जाओ और एक व्यक्ति ने ऐसी औरत की संसर्ग किया अब उसका यह कहना व्यर्थ होगा कि मैं हकीमों के इस विज्ञापन से अनजान था मुझे क्यों आतशक की बीमारी हो गई। बावा नानक साहिब ने सच कहा है। अ मंदे कम्मीं नानका जद कद मन्दा हो (अर्थात ऐ नानक बुरे कामों से अन्त में बुराई सामने आती है)।

हे मूर्ख ! जबकि ख़ुदा ने अपनी सुन्नत के अनुसार अपने दृढ़ धर्म की हुज्जत पूरी कर दी तो अब इसमें संदेह को दखल देना और फिर ख़ुदा के इतमाम हुज्जत के बेहूदा बातों को पेश करना क्या ज़रूरत है। अगर वास्तव में ख़ुदा तआला के ज्ञान में कोई ऐसा होगा कि इस पर इतमाम हुज्जत नहीं हुआ तो उसका मामला ख़ुदा के साथ हमें इस बहस की जरूरत नहीं हां जो इस्लाम से महज़ अनजान है अगर बेख़बरी में मर जाए जैसे नाबालिग बच्चे और दीवाने या किसी ऐसे देश के रहने वाले जहां इस्लाम नहीं पहुंचा वे माज़ूर हैं।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 184 -188)

☆ ☆ ☆

कलाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी म'हूद अलैहिस्सलाम

अब छोड़ दो जिहाद का ऐ दोस्तो ख़्याल
दीं के लिये हराम है अब जंग व क़ताल।।
अब आ गया मसीह जो दीं का इमाम है ।
दीं की तमाम जंगों का अब इख़्तिताम है ।।
अब आसमां से नूरे ख़ुदा का नज़ूल है ।
अब जंग और जिहाद का फ़त्वा फ़ज़ूल है ।।
दुश्मन है वह ख़ुदा का जो करता है अब जिहाद।
मुन्किर नबी का है जो यह रखता है एतिक़ाद ।।
क्यों छोड़ते हो लोगो नबी की हदीस को ।
जो छोड़ता है छोड़ दो तुम उस ख़बीस को ।।
क्यों भूलते हो तुम यज़उल् हर्ब की ख़बर ।
क्या यह नहीं बुख़ारी में देखो तो खोल कर ।।
फ़र्मा चुका है सय्यदे कौनेन मुस्तफ़ा ।
ईसा मसीह जंगों का कर देगा इल्तिवा ।।
यह हुक्म सुनकर जो भी लड़ाई को जायगा ।
वह काफ़िरों से सख़्त हज़ीमत उठायेगा ।।
अल्-किस्सा यह मसीह के आने का निशान है ।
कर देगा ख़त्म आके वह दीं की लड़ाइयाँ ।।

(दुर्रे समीन)

☆ ☆ ☆

हज़रत हाजरा

हज़रत हकीम हाजी मौलाना नूरुद्दीन साहिब ख़लीफतुल मसीह प्रथम[रज़ि] कहते हैं हाजरा नामक एक स्त्री जो मेरे अनुसंधान के अनुसार मिस्र देश की एक राजकुमारी थी। इब्राहीम के चमत्कारों को देख कर बादशाह ने अपनी पुत्री का इब्राहीम के साथ विवाह कर दिया। सुन्दर नवयुवती तथा कुंवारी थी। उस समय इब्राहीम की आयु 84 वर्ष थी जबकि वह गर्भवती हुई।

मैं बहुत ही संक्षिप्त में बताता हूं कि पहली पत्नी ने उसे निकलवा दिया इस पर अल्लाह से वार्तालाप हुआ कि क्यों निकाली। आप ने निवेदन किया कि प्रथम पत्नी रहने नही देती। ख़ुदा ने कहा वापस जाओ और उस की आज्ञा का पालन करते हुए रहो। इस के बदले मैं हम तुम्हें एक पुत्र देंगे। जिस की संतान सारे संसार के लिए मार्गदर्शन करेगी और आकाश के तारे तथा रेत के कण गिनने आसान होंगे परन्तु तेरी संतान को कोई न गिन सकेगा। अत ऐसा ही हुआ। फिर जब पुन: पत्नी ने हाजरा को दु:ख दिया तो इब्राहीम उन्हें मक्का में छोड़ गए। इब्राहीम से पूछा हमें किस के सुर्पुद करते हो आप ने उस का उत्तर नहीं दिया। फिर पूछा की किस के आदेश से यहां लाए हो कहा ख़ुदा के आदेश से। इस पर नेक धैर्यवती पत्नी ने कहा तो हमें आपकी आवश्यकता नहीं। इस पत्नी के पास न रुपया था न सम्पत्ति न जानवर थे। बच्चा भी छोटा था। वहां कोई दु:ख बांटने वाला न था। दरिन्दों का भी भय था। कोई आबादी भी न थी। परन्तु इस धैर्य का फल यह निकला कि आज मक्का एक प्रमुख शहर आबाद है। जो करोड़ों लोगों के आने का स्थान है।अल्लाह ताला कहता है जो मेरे नाम के लिए धैर्य धारण करके उसके परिणाम को जानना चाहते हैं वह सफा तथा मरवा (दो पहाड़ियों के नाम हैं) से जा कर यह ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वह स्थान अल्लाह की ओर से धैर्य के परिणाम को समझने के लिए निर्दिष्ट है। जो हज करने जाए वह वहां चल फिर कर देखे कि हमारी कृपा इस धैर्यवती पर किस प्रकार हुई। हम कितना मान सम्मान देने वाले हैं।"

(हक़ायकुल फुर्क़ान भाग 1 पृष्ठ 274-275)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad